ISBN: 978-81-949512-6-1

भारत सरकार
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
(कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग)
दलहन विकास निदेशालय
छठवीं मंजिल, विन्ध्याचल भवन
भोपाल-462004 (म.प्र.)

सत्यमेव जयते

Government of India
Ministry of Agriculture & Farmers Welfare,
Deptt. of Agriculture, Cooperation & Farmers Welfare
Directorate of Pulses Development
6th Floor, Vindhyachal Bhavan
Bhopal - 462004 (M.P.)

E-mail: dpd.mp@nic.in, Telefax: 0755-2571678, Phone: 0755-2550353/ 2572313

उर्द

वैज्ञानिक नामः विग्ना मुंगो एल.

क्षेत्रफल : 44.46 लाख हे.
उत्पादन : 26.58 लाख टन
उपज : 598 कि.ग्रा./हे.

(औसत 2014–15 से 2018–19)
सर्वोच्च उत्पादन –
35 लाख टन (2017–18)

उर्द का क्षेत्र उत्पादन एवं उपज (2010–11 से 2018–19)

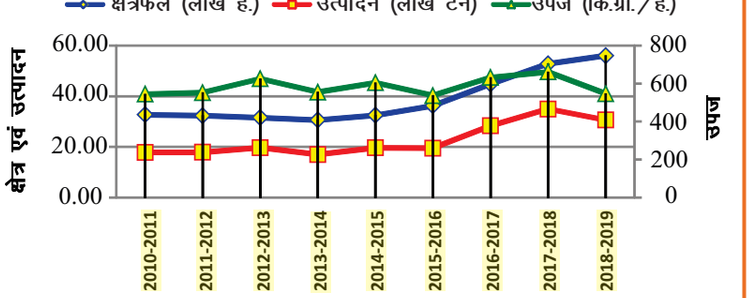

प्रमुख राज्य (औसत : 2014–15 से 2018–19)

(क्षेत्रफल : लाख हे., उत्पादन : लाख टन, उपज : कि.ग्रा./हे.)

मुख्य राज्य	क्षेत्रफल	% योगदान	उत्पादन	% योगदान	उपज
मध्य प्रदेश	14.65	33	8.62	32	589
आन्ध्र प्रदेश	3.98	9	3.44	13	863
उत्तर प्रदेश	6.01	14	3.08	12	512
तमिलनाडु	4.13	9	2.95	11	713
राजस्थान	5.13	12	2.86	11	558
उपरोक्त योग	**33.91**	**(76%)**	**20.95**	**(79%)**	**618**
सम्पूर्ण भारत	**44.46**		**26.58**		**598**

प्रमुख जिले (2018–19) (सिवाय तमिलनाडु : 2017–18)

प्रमुख राज्य	प्रमुख जिले
मध्य प्रदेश (80%)	सागर, छतरपुर, दमोह, टीकमगढ़, पन्ना, सतना, अशोकनगर, निवाड़ी, जबलपुर, शिवपुरी
आन्ध्र प्रदेश (96%)	कृष्णा, गुंटूर, श्रीकाकुलम, कुरनूल, पू. एवं प. गोदावरी, प्रकाशम, विजियानगरम
उत्तर प्रदेश (72%)	ललितपुर, बंदायू, उन्नाव, महोबा, हरदोई, कानपुर नगर, झांसी, हमीरपुर, जौनपुर, सीतापुर
तमिलनाडु (80%)	विल्लुपुरम, कुडालोर, थंजावर, थूथुकुडी, थिरूवर, नागापट्टिनम, तिरूनलवेली, थिरूवनमलई
राजस्थान (90%)	टोंक, कोटा, बारां, सावई माधोपुर, भीलवाडा, बूंदी, अजमेर, झालावार

आर्थिक महत्व :

- उर्द सभी 3 मौसमों जैसे खरीफ, रबी एवं ग्रीष्म तथा पूरे भारत में उगायी जाने वाली एक महत्वपूर्ण दलहनी फसल है।
- गहरी जड़ वाली फसल होने के नाते, मिट्टी के कणों को बांधने में मदद करता है और मृदा क्षरण को रोकता है।
- यह वायुमंडलीय नाइट्रोजन (42 कि.ग्रा./हेक्टेयर/वर्ष) को सहजीवन के माध्यम से मिट्टी को उपलब्ध करता है और मिट्टी की उर्वरता में सुधार करता है।

फसल उत्पाद :

- इसका सेवन दाल के रूप में किया जाता है (साबुत दाल/छिलके सहित/छिलके रहित/भूनकर)।
- यह पापड़ कोफते का मुख्य घटक है।
- नमकीन उत्पाद, मिठाई, इडली, वड़ा, डोसा।
- विशेष रूप से दुधारू पशुओं के लिए एक पोषक चारे के रूप में उपयोग किया जाता है एवं हरी खाद की फसल में लिया जाता है।
- उर्द के दाने में 24% प्रोटीन, 60% कार्बोहाइड्रेट, 1.3% वसा होती है और यह दलहनी फसल के अंतर्गत फॉस्फोरिक एसिड का सबसे मुख्य स्रोत है (अन्य की तुलना में 5–6% अधिक)

उन्नत प्रजातियां :

वर्ष	प्रजातियां	वर्ष	प्रजातियां
2009	एन.यू.एल. 7, एल.बी.जी. 752, सी.ओ. 6/सी.ओ.बी.जी. 653	2016	एल.बी.जी. 787, इंदिरा उर्द प्रथम, तिरुपति मीनुमु –1 (टी.बी.जी. 104), पी.डी.के.वी. ब्लैकगोल्ड (ए.के.यू.
2010	एल.यू. 391, के.यू.जी. 479	2017	वी.बी.एन. 8, ए.डी.टी. 6, के.के.एम. –1
2011	वी.बी.जी. 04–008, टी.यू. 40, वी.बी.एन. 6	2018	मुलुंद्रा उर्द 2 (के.पी.यू. 405), त्रिपुरा मस्कलाई (टी.आर.सी.यू. 99–2)
2012	यू.एच. 1	2019	वी.बी.एन. 10 (वी.बी.जी. 12–034), वी.बी.एन. 9 (वी.बी.जी. 12–111), पंत उर्द 10 (पी.यू. 10–23), पंत उर्द 7 (पी.यू. 10–16), पंत उर्द 8 (पी.यू. 11–14), पंत उर्द 9 (पी.यू. 11–25), आई.पी.यू. 13–1, आई.पी.यू. 10–26, आई.पी.यू. 11–02, जी.बी.जी. 1 (घंटशाल मीनुमु –1)
2014	डी.बी.जी.वी. –5, एस.बी.सी. 40, एम.डी.यू. 1	2020	वी.बी.एन. 10 (वी.बी.जी. 12–034), वी.बी.एन. 9 (वी.बी.जी. 12–111), के.पी.यू. 12–1735 (कोटा उर्द 4) वी. बी.एन. 11 (वी.बी.जी. 12–062), ओ.बी.जी. 33 (शशि), के.पी.यू. 524–65 (कोटा उर्द 3)

प्रकाशक : निदेशक, दलहन विकास निदेशालय, भारत सरकार, भोपाल, म.प्र.
वेबसाइट : www.dpd.gov.in

भारत सरकार
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
(कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग)
दलहन विकास निदेशालय
छठवीं मंजिल, विन्ध्याचल भवन
भोपाल-462004 (म.प्र.)

सत्यमेव जयते

Government of India
Ministry of Agriculture & Farmers Welfare,
Deptt. of Agriculture, Cooperation & Farmers Welfare
Directorate of Pulses Development
6th Floor, Vindhyachal Bhavan
Bhopal - 462004 (M.P.)

E-mail: dpd.mp@nic.in, Telefax: 0755-2571678, Phone: 0755-2550353/ 2572313

बुवाई ऋतु : खरीफ एवं रबी तथा बसंत/ग्रीष्म (जायद)

बुवाई समय : खरीफ : जून के अंतिम सप्ताह से जुलाई के मध्य या प्रथम सप्ताह तक
रबी : अक्टूबर के द्वितीय पखवाड़े से नवम्बर के द्वितीय पखवाड़े तक
बसंत/ग्रीष्म (जायद)– 15 फरवरी से मार्च के प्रथम सप्ताह तक

बुवाई विधि : हाथ से : पंक्ति बुवाई, छिड़काव विधि
मशीन द्वारा : सीड ड्रिल की सहायता से रेज्ड बेड

अंतराल : खरीफ : 45X10 से.मी.; **रबी/बसंत :** 30X15 से.मी.

बीज गहराई : 5–8 से.मी.

बीज दर : खरीफ : 12–15 कि.ग्रा./हे.; **रबी :** 18–20 कि.ग्रा./हे. (ऊँचे क्षेत्र); 40 कि.ग्रा./हे. (धान पड़त क्षेत्र); **बसंत :** 30–35 कि.ग्रा./हे.

बीजोपचार : बीज का उपचार बुवाई से 2 दिन पहले करें।

रोग : कार्बेन्डाज़िम @ 2.5 ग्रा./कि.ग्रा. बीज

कल्चर एवं सूक्ष्म पोषक तत्व : राइजोबियम कल्चर (5 ग्रा./कि.ग्रा. बीज)

मिट्टी का प्रकार : रेतीली से भारी कपास की मिट्टी सबसे उपयुक्त होती है। मिट्टी अच्छी तरह से जल निकास वाली दोमट जिसका पीएच मान 4.7 से 7.5 के बीच होता है। उर्द को क्षारीय और लवणीय मिट्टी में नहीं उगाया जा सकता है।

मौसम : फसल को उच्च तापमान, कम आर्द्रता और लगभग 60–75 से.मी. की मध्यम वर्षा की आवश्यकता होती है। फूल आने के दौरान भारी वर्षा हानिकारक होती है।

पौध पोषक तत्व प्रबंधन : बुवाई के समय 15–20 किलोग्राम नाइट्रोजन, 40–50 किलोग्राम फॉस्फोरस, 30–40 किलो पोटाश प्रति हे. का उपयोग करें।

सल्फर : 20 कि.ग्रा./हे.; **मैंगनीज :** 2% मैंगनीज सल्फेट के 2% घोल में बीजों को भिगोना या 1% मैंगनीज सल्फेट के पर्णीय छिड़काव; **मोलिब्डेनम :** 0.5 कि.ग्रा. सोडियम मोलिब्डेट/हे. आधार रूप में या 0.1% के दो पर्णीय छिड़काव या बीजोपचार अनुशंसित है।

खरपतवार प्रबंधन : i) बुवाई के 20–25 दिन बाद; बुवाई के 45 दिन बाद; ii) पेन्डीमिथालिन @ 700 ग्राम सक्रिय तत्व प्रति हे. को 800–1000 ली. पानी में घोल बनाकर बुवाई से पहले छिड़काव करें।

उर्वरक का प्रयोग मृदा परीक्षण रिपोर्ट पर आधारित होना चाहिए।

सिंचाई : खरीफ : फली बनने के समय एक सिंचाई दे।
बसंत/ग्रीष्म : बुवाई के 20–25 दिन बाद पुष्पन से पूर्व प्रथम सिंचाई दे। द्वितीय सिंचाई बुवाई के 40–45 दिन बाद फली बनने पर दे।

फसल प्रणाली :

चक्रण : i) मक्का–आलू–उर्द; ii) मक्का–तुरई–उर्द; iii) धान–गेहूँ–उर्द; iv) उर्द–सरसों–मूंग/उर्द; v) आलू–गेहूँ–उर्द

अंतर्वर्ती : खरीफ : उर्द + अरहर (1:1);
बसंत : उर्द + गन्ना (2:1), उर्द + सूरजमुखी (2:6)

बीज प्रतिस्थापन दर :

फसल	2011	2012	2013	2014	2015	2016
उर्द	34.41	33.96	49.55	30.27	33.72	37.97

कटाई : जब 70–80% फली परिपक्व हो जाती है और ज्यादातर फली काली हो जाती है, तो उर्द की कटाई की जानी चाहिए। साफ बीजों को 3–4 दिनों के लिए धूप में सुखाया जाना चाहिए जिससे उनकी नमी की मात्रा 8–10% हो जाए तथा सुरक्षित भंडारण के लिए इनको उपयुक्त कोटी/बिन में रखें।

फसल आर्थिकी :

मानक	रबी
उपज (औसत 2014–15 से 2018–19)	5.98 क्विंटल/हे.
सकल आय (न्यूनतम समर्थन मूल्य पर)	रू. 35880/हे.
खेती की लागत (CoC A_2+FL)*	रू. 21033/हे.
उत्पादन की लागत	रू. 3517/क्विंटल

*CoC – कृषि लागत; A_2 – वास्तव में किया गया भुगतान; FL- पारिवारिक श्रम का प्रतिष्ठित मूल्य।

कीट व्याधि और रोग प्रबंधन :

प्रमुख रोग	प्रबंधन
पीला मोजेक रोग	i) 10–15 दिनों के अंतराल पर ऑक्सीडिमेटोन मिथाइल 25 ई.सी. @ 2 मिली./लीटर का छिड़काव करें। ii) रोगग्रस्त पौधों को निकालकर नष्ट कर दें। iii) प्रतिरोधी किस्में उगाएं– आई.पी.यू. 94–1 (उत्तरा), शेखर 3, उजाला (ओ.बी.जे. 17), वी.बी.एन. (बी.जी.) 7, प्रताप उर्द 1।
चूर्णित फूंदी	i) नीम के बीज का अर्क @ 50 ग्राम/लीटर पानी या नीम का तेल 3000 पी.पी.एम. @ 20 मिली./लीटर का छिड़काव करें; ii) प्रतिरोधी किस्में उगाएं– एलबीजी 648, प्रभा, आईपीयू 02–43, एकेयू 15; iii) स्वच्छ खेती, फसल चक्रण अपनाएं।
पत्ति धब्बा	आधार रूप में– जिंक सल्फेट @ 25 कि.ग्रा./हेक्टेयर या नीम केक @ 150 कि.ग्रा./हेक्टेयर या मिट्टी के स्यूडोमोनास फ्लोरेसेंस अनुप्रयोग या ट्राइकोडर्मा विरडी @ 2.5 कि.ग्रा./हेक्टेयर + 50 कि.ग्रा. अच्छी तरह से विघटित गोबर खाद का बुवाई के समय प्रयोग करें।

प्रमुख कीट	प्रबंधन
एफिड्स	i) 5% नीम के अर्क या 2% नीम तेल 3000 पी.पी.एम. का स्प्रे करें; ii) इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. @ 0.2 मिली./लीटर पानी में घोल बनाकर स्प्रे करें; iii) Coccinellid भृंग, उनके grubs और Chrysoperla का संरक्षण करें।
तंबाकू इल्ली	i) नोवाल्यूरॉन 10 ई.सी. @ 0.75 मिली./लीटर का पर्णीय छिडकाव करें, एस. लिटुरा के अंडे के खिलाफ चिटिन संश्लेषण अवरोधक; ii) कीट निवारक खाद्य पदार्थ के रूप में सीताफल के अर्क का छिड़काव करें।

न्यूनतम समर्थन मूल्य :

(रू./क्विंटल)

फसल	2015–16	2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	2020–21
उर्द	4625*	5000^	5400@	5600	5700	6000

*रू. 75/– प्रति क्विंटल का बोनस सन्निहित; ^ रू. 200/– प्रति क्विंटल का बोनस सन्निहित; @ रू. 150/– प्रति क्विंटल का बोनस सन्निहित

संकलन एवं संपादन
• डॉ. पु.के. तिवारी, निदेशक
• डॉ. पु.के. शिवहरे, संयुक्त निदेशक
• डॉ. संदीप सिलावट, वरिष्ठ तकनीकी सहायक
• श्री सरजू पल्लेवार, सांख्यिकी अन्वेषक
प्रकाशन वर्ष 2021